International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 58-60

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 58-60
www.allresearchjournal.com
Received: 27-11-2015
Accepted: 28-12-2015

अनिल कुमार
शोध–छात्र (एम्॰ फिल्॰), संस्कृत, पालि, प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र, हरयाणा, भारत।

Correspondence:
अनिल कुमार
शोध–छात्र (एम्॰फिल्॰), संस्कृत, पालि, प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र हरयाणा, भारत। ।

ब्राह्मण–ग्रन्थों का सामान्य परिचय

अनिल कुमार

'ब्राह्मण' शब्द का अर्थः

ब्राह्मण शब्द से यहाँ ब्राह्मण ग्रन्थ संकेतित होता है जिसका अभिप्राय है कि ये ब्राह्मन् से सम्बद्ध ग्रन्थ हैं। 'ब्रह्म वै मन्त्रः' तथा ष्वेदों ब्रह्म' के अनुसार यह शब्द मन्त्र अथवा वेद के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। मन्त्रों अथवा वेदों की व्याख्या प्रस्तुत करने के कारण इन ग्रन्थों की संज्ञा ब्राह्मण है। ब्राह्मण–साहित्य के अध्ययन के बिना वेदों का यथार्थ अभिप्राय समझना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव है। वैदिक आख्यानों के व्याख्यानपरक इन ब्राह्मणग्रन्थों की उपयोगिता के कारण ही वेद के पश्चात् दूसरा स्थान और सम्मान ब्राह्मणग्रन्थों को मिला। यही कारण था कि ब्राह्मण–साहित्य स्वतन्त्र–साहित्य होते हुए भी उनकी उपयोगिता दिखाने के उद्देश्य से उन्हे कहीं–कहीं वेद ही कह दिया गया– 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्।'

'ब्राह्मण' शब्द तद्धित रुप है। यह ब्रह्मन् से व्युत्पन्न होता है। ब्राह्मण शब्द को सुनते ही दो अर्थ सामने आते हैं– (1) चार वर्णों (ब्राह्मण–क्षत्रिय–वैश्य–शूद्र) में प्रथम परिगणित वर्ण या इस वर्ण का व्यक्ति और (2) वैदिक वाङ्मय में वेद की संहिताओं के तुरंत बाद गिने जाने वाले 'ब्राह्मण–ग्रन्थ'। इनमें वर्णवाचक ब्राह्मण शब्द पुल्लिंग है, जबकि ग्रन्थवाचक शब्द नपुंसकलिंग है। ब्राह्मण शब्द दो अर्थो में प्रयुक्त हुआ है। एक तो 'ब्रह्म' (यज्ञ) के व्याख्यापरक होने से यह 'ब्राह्मण' शब्द प्रसिद्ध हुआ। दूसरा प्रोक्त अर्थ में भी ब्राह्मण शब्द निष्पन्न हुआ माना जा सकता है। इस प्रकार विद्वान दो अर्थो में ब्राह्मण शब्द का प्रयोग मानते हैं। यद्यपि दोनों ही अर्थों में किसी प्रकार की असंगति वा बाधा नहीं हैं। पुनरपि पहले अर्थ ब्रह्मन् से ब्राह्मण शब्द का प्रयोग मानना अधिक संगत प्रतीत होता है। क्योंकि प्रायः विषय को लेकर ग्रन्थ का नामकरण होता है। ब्राह्मणों का विषय मन्त्र, वेद वा यज्ञ है। इसलिए ब्रह्मन्+अण्त्र 'ब्राह्मण' ऐसा मानना प्रोक्त अर्थ की अपेक्षा अधिक समुचित जान पड़ता है।

यद्यपि ब्राह्मणग्रन्थों में अनेक शब्दों के निर्वचन, राजाओं की वंशावली, ऋषियों की परम्परा और आख्यान–उपाख्यान आदि भी हैं, पर ब्राह्मण–ग्रन्थों का मुख्य प्रतिपाद्य ब्रह्म अर्थात् यज्ञ ही है। ब्राह्मण–ग्रन्थों ने ही यज्ञ (त्रब्रह्म) को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया है– ष्यज्ञों वे श्रेष्ठतमं कर्मष्। यज्ञ मानवीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अंग है। गोपथ–ब्राह्मण में 7 गृह्याग्नि यज्ञों और 14 श्रोताग्नि यज्ञों का निरूपण तो हुआ ही है, पूर्णाहुति, पुत्रेष्टि, राजसूय, पुरुषमेध, सर्वमेध आदि यज्ञों का यथावसर उल्लेख हुआ है। अतः इसमें सन्देह नहीं कि ब्राह्मणग्रन्थों से वह साहित्य अभिप्रेत है जो ब्रह्म अथवा यज्ञों के महत्त्व और विनियोग को स्पष्ट करता है।

(2) ब्राह्मण शब्द का स्वरूपः

भारतीय संस्कृति में वैदिक वाङ्मय का अनुपम स्थान है। वैदिक वाङ्मय के चार विभाग हैं– संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्। संहिता (मन्त्रभाग) और ब्राह्मण (व्याख्यान भाग) दो पृथक विभाग होते हुए भी कितने ही स्थलों में, विशेषकर सूत्र–ग्रन्थों में मन्त्र और ब्राह्मण को ष्वेदष संज्ञा प्राप्त है। इस प्रकार कतिपय प्राचीन विद्वानों ने ब्राह्मणों को वेदों के रूप में स्वीकार किया था, यह प्रतीत होता है। परन्तु आधुनिक युगीन वेद–मनीषी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अनेक युक्तियों और प्रमाणों के आधार पर यह प्रतिपादित किया है कि वेद शब्द संहिता का ही वाचक है और ब्राह्मणादि ग्रन्थ सभी वेद के व्याख्यान है, वेद नहीं। वेदों और ब्राह्मणों के अध्ययन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होते हुए भी ब्राह्मण–ग्रन्थ वैदिक–ग्रन्थों से अलग हैं। इनको वैदिक–साहित्य का अंग तो कहा जा सकता है, परन्तु वेद नहीं।

वैदिक मन्त्रों तथा ब्राह्मण–ग्रन्थों की अत्याधिक घनिष्ठता के कारण ही ब्राह्मणों को भी वेद कह दिया होगा, परन्तु सच्चाई तो यह है कि मन्त्रों की व्याख्या करने के लिए एवं उनके अर्थों का प्रतिपादन

करने के लिए ब्राह्मण–ग्रन्थों की रचना की गई थी। ब्राह्मण–ग्रन्थों की सहायता से मन्त्रों के अर्थों को सहजता के साथ अधिक अच्छा समझा जा सकता है। जिस प्रकार सिक्के के दो पक्ष सिक्का ही है। इसी प्रकार मन्त्र (शब्द) और ब्राह्मण (अथ) मिलकर वेद ही हैं।

विभिन्न ब्राह्मण–ग्रन्थ

प्रत्येक वेद के अपने अलग–अलग ब्राह्मण है। प्राचीन ग्रन्थो में ऐसा उल्लेख मिलता है। पं॰ भगवत् दत्त ने वेदों की 1223 अनुमानित शाखाओं का उल्लेख किया है, पर सम्प्रति अनेक शाखाएँ अभी तक उपलब्ध नहीं हो पायी हैं। सम्भव है, उतने ही ब्राह्मणग्रन्थ भी रहे होंगे। ऋग्वेद की 27 शाखाओं का उल्लेख इतिहासकारों ने किया है, पर आज मात्र शाकलशाखा ही उपलब्ध है।

ऋग्वेदीय–ब्राह्मण

1. 'ऐतरेय–ब्राह्मण' के संकलनकर्ता महीदास ऐतरेय है। इस ब्राह्मण में कुल चालीस अध्याय और पाँच अध्यायों को लेकर एक–एक पंचिका है। प्रथम सोलह अध्यायों में 'अग्निष्टोम याग' का विवरण है। अग्निष्टोम एक सोमयाग है, जो समस्त सोमयागों का प्रकृति अथवा आदर्श है। तत्पश्चात् दो अध्यायों में गवामयन याग का विवरण है। यह भी एक सोमयाग है। 19 से 24 अध्याय तक द्वादशाह का विवरण है, 25 से 32 अध्याय तक ष्अग्निहोत्र यागष् का विवरण है, जो श्रौतयागों में सर्वाधिक सरल है। इस ब्राह्मण के शेष अंग में ष्राजसूय–यज्ञष् का विवरण है। 40 अध्यायों 5 पंचिकाओं 285 कण्डिकाओं में विभक्त यह ब्राह्मण ऋग्वेद की शाक्ल शाखा से सम्बद्ध है।

2. कौषीतकि ब्राह्मण

इस ब्राह्मण का सम्बन्ध ऋग्वेद की वाष्कल शाखा से है। यद्यपि यह शाखा अद्यत्वे उपलब्ध नहीं है। इस ब्राह्मण को कतिपय विद्वान् शाङ्खायन ब्राह्मण भी कहते हैं और कुछ कौषीतकि तथा शाङ्खायन को पृथक्–पृथक् मानते हैं। इसमें 30 अध्याय 221 खण्ड हैं। कौषीतकि का प्रधान विषय सोमयाग है प्रथम 6 अध्यायों में अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमास और चातुर्मास्य का वर्णन है, जबकि शेष 7 से 30 अध्यायों में सोमयाग ही वर्णित हुआ है।

3. शाङ्खायन–ब्राह्मण

कौषीतकि तथा शांखायन–ब्राह्मणों को प्रायः विद्वान् पृथक–पृथक नहीं समझते। यह उल्लेखनीय है कि पं॰ भगवद्दत्त ने इसे पृथक मानने में ही अपनी सहमति दिखाई है।

यजुर्वेद के ब्राह्मण

(क) शुक्ल–यजुर्वेद

शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ उपलब्ध हैं– वाजसनेयि अथवा माध्यन्दिन और काण्व शाखा। दोनों शाखाओं के ब्राह्मण उपलब्ध हैं–

(i) माध्यन्दिन शाखा का ब्राह्मणः शतपथ–ब्राह्मण

शतपथ एक महत्त्वपूर्ण ब्राह्मण है। यह बड़ा विशाल ग्रन्थ है। विस्तार की दृष्टि से ऋग्वेद के पश्चात् वैदिक–साहित्य में यही ग्रन्थ दूसरे स्थान पर आता है। कीड और ओल्डबर्ग ने इसे प्राचीन ब्राह्मण माना है। शतपथ का प्रवक्ता याज्ञवल्क्य ऋषि को माना जाता है। इसमें 100 अध्याय हैं, इसी कारण इसका नाम शतपथ हुआ है। इसमें 14 काण्ड हैं जिसमें प्रथम नौ काण्ड एक प्रकार से वाजसनेयि संहिता के आरम्भिक अठारह अध्यायों की टीका के रूप में है। शतपथ–ब्राह्मण के पाँच काण्डों और अन्तिम चौदहवें काण्ड के रचयिता महर्षि शाण्डिल्य बताये जाते हैं। इसमें 38 प्रपाठक, 438 ब्राह्मण और 7624 कण्डिकाएँ हैं। इसमें विभिन्न यागों के वर्णन के अतिरिक्त अनेक आख्यान–उपाख्यान भी दिए गए हैं।

(ii) काण्वशाखा का ब्राह्मणः शतपथ–ब्राह्मण

शुक्ल यजुर्वेद की काण्व–शाखा के ब्राह्मण का नाम भी शतपथ ही है। यह शतपथ माध्यन्दिन शाखीय शतपथ की अपेक्षा कुछ लघुकाय है। इसमें 17 काण्ड हैं। कैलेण्डर के अनुसार इसमें 104 अध्याय, 446 ब्राह्मण और 5865 कण्डिकाएँ हैं। विषय की दृष्टि से काण्वशाखीय शतपथ की समानता माध्यन्दिनशाखीय शतपथ से है। दोनों में विषयवस्तु बहुत कुछ समान ही है।

(ख) कृष्णयजुर्वेद

कृष्ण–यजुर्वेद की तीन शाखाएँ उपलब्ध हैं– तैत्तिरीय, मैत्रायणी और कठ संहिता। मैत्रायणी और कठ संहिता का कोई स्वतंत्र ब्राह्मण–ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ है। इनके अलग–अलग ब्राह्मण थे, ऐसे अनेक संकेत मिले हैं।

तैत्तिरीय शाखा का ब्राह्मणः तैत्तिरीय–ब्राह्मण

तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध ब्राह्मण का नाम तैत्तिरीय–ब्राह्मण है। इसमें 3 काण्ड 25 प्रपाठक और 308 अनुवाक हैं। इस पर सायण ने भाष्य भी लिखा है। इस ब्राह्मण में अश्वमेघ, अग्न्याधान, गवामयन, वाजनेय, सोम, राजसूय, अग्निहोत्र, उपहोम, सोत्रमणी आदि यागों का निरूपण हुआ है। इसके अतिरिक्त अहिल्या, शुनःशेप, नचिकेता, प्रजापति कन्यायें सोम आदि कथाएँ भी इसमें उपलब्ध है। तैत्तिरीय ब्राह्मण का अन्तिम अंश ष्तैत्तिरीय–आरण्यकष् कहलाता हैं। इस आरण्यक का एक ही अंश तैत्तिरीयोपनिषद् है।

सामवेद के ब्राह्मण

सामवेद की तीन शाखाएँ ही उपलब्ध हैं– कौथुम, जैमिनीय और राणायनीय। राणायनीय शाखा का कोई ब्राह्मण अब तक प्रकाश में नहीं आया है।

(i) कौथुम शाखा का ब्राह्मण : ताण्ड्य ब्राह्मण

यह ब्राह्मण 40 अध्यायों में विभक्त है। तण्डि ऋषि के पुत्र ताण्ड्य ही इस ब्राह्मण के प्रवक्ता माने जाते हैं। इसके प्रथम 25 अध्यायों को पंचविंश ब्राह्मण कहा जाता है। शेष 26 से 30 अध्यायों को षड्विंश–ब्राह्मण तथा 31 से 32 अध्याय मन्त्रब्राह्मण कहे जाते हैं। षड्विंश–ब्राह्मण का ही अन्तिम अध्याय ष्अद्भुत–ब्राह्मणष् कहलाता है। अन्तिम आठ अध्यायों को ष्छान्दोग्य–ब्राह्मणष् कहा जाता है। इसी का एक अंश ष्दैवत–ब्राह्मणष् कहा जाता है।

(2) जैमिनीय शाखा का ब्राह्मणः जैमिनीय–ब्राह्मण

जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण–पण्डितों ने जैमिनीय–ब्राह्मण को एक प्राचीन ब्राह्मण के रूप मे मान्यता दी है। यह ब्राह्मण कुल आठ अध्यायों में विभक्त है। प्रथम तीन अध्याय कर्मकाण्ड के हैं। चतुर्थ से सप्तम अध्याय तक के भाग का नाम उपनिषद्–ब्राह्मण है। यह आरण्यक एवं उपनिषद् का सम्मिश्रण है। प्रसिद्ध तवल्कार अथवा केनोपनिषद् सप्तम अध्याय के अठारहवें खण्ड से आरम्भ होकर 21वें खण्ड में समाप्त है। इसके पश्चात् ओर भी सात खण्डों में सप्तम अध्याय समाप्त हुआ है। अष्टम अध्याय का नाम आर्षेय–ब्राह्मण है। जिसमें सामसंहिता के ग्राम–गेय एवं आरण्य–गेय गान के सामसमूह के ऋषि, छन्द देवता आदि की एक अनुक्रमणी है।

कुछ अन्य सामवेदीय–ब्राह्मण

(i) वंश–ब्राह्मण

यह आकार की दृष्टि से बहुत छोटा है। यह तीन खण्डों में

विभक्त है। इसमें सामवेदीय आचार्यों की वंश–परम्परा दी गई है।

(ii) संहितोपनिषद् ब्राह्मण

इसमें एक ही प्रपाठक है, जो पाँच–खण्डों में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड का विभाजन सूत्रों में है। इसमें सामगान का विवरण मिलता है।

(iii) सामविधान ब्राह्मण

इसमें सामगान आदि भी बताए गए है। विविध–उपायों का वर्णन इसमें उपलब्ध होता है। अभिचार आदि कर्मो का वर्णन है। इसमें तीन प्रकरण हैं। प्रथम में विविध व्रतनिरूपण द्वितीय में तान्त्रिक विधियाँ दी गई है और तृतीय में आयुष्य की वृद्धि के उपानुष्ठान आदि विषय वर्णित है। तत्पश्चात् तीनो प्रपाठकों में आर्षेय–ब्राह्मण है जो सामवेद की जैमिनीय एवं कौथुम दोनों शाखाओं में ही है।

(iv) देवत–ब्राह्मण

देवताध्याय तीन खण्डों में है। प्रथम खण्ड में साम के निधन अथवा अन्त्य भाग के देवता का विवरण एवं तृतीय खण्ड के छन्द के नाम की निरूक्ति अथवा व्युत्पत्ति दी गई है।

अथर्ववेद का ब्राह्मण

अथर्ववेद की नौ शाखाओं में से केवल दो शाखाएँ ही उपलब्ध हैं– शौनक और पिप्लाद्–शाखा, पर ब्राह्मण ग्रन्थ एक ही उपलब्ध है– गोपथ ब्राह्मण।

गोपथ–ब्राह्मण

अथर्ववेद का एकमात्र यही ब्राह्मण उपलब्ध है। गोपथ ऋषि प्रोक्ता होने से यह षोपथ–ब्राह्मणष कहलाता है। अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा यह कुछ अर्वाचीन माना जाता है। इस ब्राह्मण में दो भाग हैं– पूर्व भाग और उत्तर भाग। पूर्व भाग में पाँच प्रपाठक है, उनमें 135 कण्डिकाएँ है तथा उत्तर भाग में 6 प्रपाठक है उन प्रपाठकों में 123 कण्डिकाएँ हैं। विषय–वस्तु की बहुत कुछ सामग्री अन्य ब्राह्मणग्रन्थों से उधार ली गई है। व्याख्या या विवृति की शैली बहुत कुछ आरण्यक एवं उपनिषद् जैसी ही है। अतएव पंडितों ने इसे अर्वाचीन युग की रचना के रूप में मान्यता दी है। इसमें ऐतरेय, कौषीतकि , तैत्तिरीय, शतपथ, पंचविंश आदि ब्राह्मणों से पर्याप्त भाग गृहीत है। गोपथ–ब्राह्मण यज्ञविषयक है। आत्मिक यज्ञ से पुरूषार्थ बढ़ाकर स्वर्गप्राप्ति का विधान इस ब्राह्मण में वेदमन्त्रों द्वारा वर्णित है। ओंकार की व्याख्या तथा ब्रहाचारी के नियमों का वर्णन, ऋत्विज् के कार्यो का वर्णन, अश्वमेघ आदि यागों का निरूपण है।

इस प्रकार गोपथ–ब्राह्मण का ब्राह्मण–साहित्य में वही स्थान है, जो अन्य ब्राह्मणों का है। जिस प्रकार शतपथ, ऐतरेय आदि की उपयोगिता यजुर्वेद, ऋग्वेद आदि के मन्त्रार्थ और यज्ञ विज्ञान में है, उसी प्रकार गोपथ की उपयोगिता अथर्ववेद के मन्त्रार्थ और यज्ञ प्रक्रिया में हैं।

सन्दर्भ सूची

1. अष्टाध्यायी सूत्रपाठ (पाणिनीय): पाणिनि, सम्पादक ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलाल कपूर ट्रस्ट, गुरू बाजार, अमृतसर, चतुर्थ संस्करण–1961।
2. ऋग्वेद–संहिताः सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी सूरत 1957।
3. ऐतरेय ब्राह्मणः गंगा प्रसाद उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
4. गोपथ–ब्राह्मणः डॉ॰ गास्ट्रा लक्अउन, 1919।
5. छान्दोग्योपनिषद्: वैदिक मन्त्रालय, अजमेर, 1933।
6. तैत्तिरीय–ब्राह्मणः भाग 1,2,3 आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली, पुना, 1934।
7. निरूक्त (पास्क): दुर्गाचार्यवृत्तिसहित, बम्बई संस्करण 1982।
8. शतपथ–ब्राह्मणः गंगा प्रसाद उपाध्याय, प्राचीन वैज्ञानिकाध्ययन अनुसंधान संस्थान, दिल्ली 8, 1967, 1969।